अध्याय 1

प्रस्तावना-

पारिस्थितिकी शब्द अग्रेंजी भाषा के 'Ecology' शब्द का हिन्दी रूपांतरण है। Ecology दो ग्रीक शब्दों 'Oikos' तथा 'Logos' से निर्मित है। प्रथम शब्द का अर्थ आवास (Habitat) तथा द्वितीय शब्द का मतलब अध्ययन अथवा ज्ञान से है। अर्थात पारिस्थितिकी वह विज्ञान है जिसमें आवास और उसके अंतर्गत आने वाले विभिन्न घटकों एवं जीवधारियों का अध्ययन करते हैं। जर्मन जीवशास्त्री हैकेल ऑर्नेस्ट[1] (1866) ने पारिस्थितिकी के लिए 'Ocklogic' शब्द का प्रयोग किया है, जिसमें पशु-पक्षियों पर वनस्पति जगत के सजीव और निर्जीव तत्वों के प्रभाव का अध्ययन प्रस्तुत किया। इन्होंने पारिस्थितिकी को परिभाषित करते हुए कहा है कि "एक दूसरे के साथ रहने वाले जीव-जन्तु आपस में और प्रकृति के साथ अंतःसंबंध रखते हैं जो लगातार एक-दूसरे को प्रभावित भी करते हैं।" यदि सरल शब्दों में कहा जाए तो पारिस्थितिकी का मुख्य उद्देश्य अपने आस पास के वातावरण को समझना है। वातावरण के साथ सामाजिक-सांस्कृतिक तत्वों का भी पारिस्थितिकी के अंतर्गत अध्ययन किया जा सकता है क्योंकि प्रत्येक जीवधारी के आस-पास के वातावरण के निर्माण में इनका प्रमुख योगदान रहता है, जिसमें मानव का प्रथम स्थान होता है। प्रारम्भ में मानव ने पारिस्थितिकी को जिस रूप में पाया उसी रूप में उपभोग किया। परंतु समय बितने के साथ प्रौद्योगिकी का विकास भी हुआ जिससे इन्हें पारिस्थितिकी के साथ जुड़ने का मौका मिला। समय के साथ पारिस्थितिकी और मानव के बीच की दूरी कम होती गयी और आपसी संबंध बढ़ता गया। वर्तमान समय में अनेक विद्वानों ने इसके संबंध पर अपने विचार प्रस्तुत किये परंतु आज भी इनके संबंध को उचित तरीके से नहीं समझा जा सका है, जिसका प्रमुख कारण यह माना जा सकता है कि धरती के मूल निवासी अर्थात आदिवासियों और पारिस्थितिकी के बीच के अंतःसंबंध को ठीक प्रकार से नहीं समझा जा

[1]अर्नेस्ट, हैकल.(1866). जनरेल मोर्पोलॉजी देर ऑर्गैनिज़्मेन. बर्लिन : ड्रक. यू. एन. वेर्लेग वॉन जार्ज रीमर.

सका है। इसी संदर्भ में फ्रेंक[2] (1979) ने कहा है कि नृपारिस्थितिकी विज्ञान का मूलभूत आधार यह है कि "स्थानीय लोग किस प्राकृतिक वस्तु को ज्यादा महत्व देते हैं और किस को बहुत कम देते हैं तथा वह अपने पर्यावरण के साथ किस तरह अनुकूलन करते हैं।" यह समझने का प्रयास किया गया है कि नृपारिस्थितिकी विज्ञान की जड़े अमेरिकी प्रसारवाद संप्रदाय के विद्वान फ्रांस बोआस[3] (1920) ने उद्विकासवाद की आलोचना करते हुए कहते हैं कि विभिन्न संस्कृतियों को समझने के लिए मानवविज्ञान की आधुनिक पद्धति 'एमिक दृष्टिकोण' का सहारा लेना होगा। अर्थात स्थानीय पारिस्थितिकी को वहाँ के स्थानीय लोगों के नजरों के आधार से समझना होगा। अमेरिकी नवउद्विकासवाद संप्रदाय के विद्वान जूलियन एच. स्टीव□[4] (1955) ने सांस्कृतिक पारिस्थितिकी की अवधारणा प्रतिपादित करते हुए कहा है कि सांस्कृतिक तत्वों को पारिस्थितिकीय दृष्टिकोण से समझने में विशेष बल दिया जाना चाहिए। नृपारिस्थितिकीय शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग संज्ञानात्मक मानवविज्ञानी हेरोल□कोकलिन[5] (1954) ने किया था। उन्होंने भाषा के आधार पर नृपारिस्थितिकीय विज्ञान का अध्ययन किया। उनका यह अध्ययन दक्षिणी पूर्वी एशिया में रहने वाले हनमूनों जनजाति पर था।

शुरुआती मानवशास्त्रियों का सबसे ज्यादा ध्यान संस्कृति और पर्यावरण के संबंध पर दिया जिसमें उदविकसवाद से लेकर संस्कृति और व्यक्तित्व संप्रदाय तक के विद्वान आते हैं। जूलियन स्टीव□उन प्रारंभिक मानवविज्ञानियों में से हैं, जिन्होंने संस्कृति एवं पर्यावरण के बीच के परस्पर संबंधों पर अत्यधिक बल दिया है। स्टीव□का कहना है कि "संस्कृति का विकास निश्चित पर्यावरण

[2]Frank, Andre Gunder. (1979). Mexican Agriculture Transformation of the Mode of Production. Press : Cambridge University.

[3]Boas, Franz. (1920).The methods of ethnology. American Anthropologist. Vol. 22 (4) : 311-321.

[4] स्टीव□जूलियन. (1955). थ्योरी ऑफ कल्चर.यूनिवर्सिटी ऑफ इलिन्वाय प्रेस : अरबना.

[5]Conklin, Harold C. (1954). An Ethnoecological approch to shifting agriculture. The new York academy of sciences. Volume 17.

(भौगोलिक और भौतिक) में रह रहे लोगों तथा उनकी तकनीक के अंतर क्रिया के कारण होता है, क्योंकि तकनीक और पर्यावरण भिन्न-भिन्न समाजों में अलग होता है। इसीलिए संस्कृति का उद्विकास भी अलग-अलग पथ से होता है"। रैपापोर्ट का यह मानना है कि पर्यावरण के अनुसार मानव की सांस्कृतिक का विकास होता है तथा इन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि प्रत्येक संस्कृति अपने पर्यावरण के अनुकूल विकसित होती है। एक संस्कृति दूसरी संस्कृति के लिए खराब मानी जा सकती है, परन्तु वह जिस पारिस्थितिकीय में विकसित होती है वहाँ उपयुक्त होती है। रैपापोर्ट ने 'न्यूगिनी' क्षेत्र में निवास करने वाले सेंम बेगा का उदाहरण दिया है जो अपनी संस्कृति और पर्यावरण के बीच गहरा संबंध रखते हैं। सेंग बेगा एक प्रकार से उद्यान कृषि करते हैं जिसमें हल का उपयोग नही किया जाता है, बल्कि कुदाल या खुरपी से खोदाई करके खेती की जाती है। हल से खेती न करने के कारण उसे उद्यान कृषि कहते हैं। इस उद्यान कृषि में मुख्य रूप से फल, फूलो एवं साब्जियों की खेती की जाती है। खेती के साथ-साथ सूअर पालन का भी काम किया जाता है। जैसे-जैसे सूअर का विकास होता है, वैसे-वैसे उनकी जनसंख्या भी बढ़ती जाती है और उनके पास बढ़ी हुई सूअरों कि संख्या को खिलाने के लिए कुछ नही होता है, क्योंकि यह जनजाति सिर्फ फल, फूलों एवं सब्जियों की खेती करते हैं। परंतु सूअर सड़े-गले पदार्थों को ही खाती हैं। जब उनके पास सूअर की संख्या अधिक हो जाती है तब उन को खिलाने के लिए कुछ नहीं बचाता है, उस परिस्थिति में सूअर एक-दूसरे के खेतों में चले जाते है और फल, फूल एवं सब्जियों को नष्ट कर देते है। जिन लोगों का फसल नष्ट हो जाता है वे लोग सूअर मालिक से फसल कि आपूर्ति करने को कहते हैं यदि वे नुकसान का भुगतान नहीं कर पाते हैं तो एक नियम के अनुसार उनको अपनी पत्नी से दस गुना ज्यादा सूअरों कि बाली देनी पड़ती थी। बाद में उन लोग ने एक नियय बनाया कि गाँव में एक उत्सव पर दस सूअरों की बलि दी जाएगी। जिसक परिणाम यह हुआ कि धीरे-धीरे उस गाँव में सूअर की जनसंख्या कम हो गयी और वहाँ के पारिस्थितिकी में बदलाव आने लगा। रैपापोर्ट का कहना है 'सेंम बेगा' लोग इस समस्या का समाधान करने के लिए अतिरिक्त सुअरों को मारना प्रारम्भ कर दिया। सुअर को मारकर सामूहिक भोजन का

निमंत्रण देते थे। रैपापोर्ट का मानना है इस भोज के सांस्कृतिक कारण को न खोजकर परिस्थितिकी कारण को खोजना चाहिए क्योंकि सुअर भोज का संस्कृति तत्व अधिक महत्वपूर्ण नहीं है जबकि इसका पर्यावरणीय तत्व अधिक महत्वपूर्ण है।

जहाँ तक जनजाति शब्द कि बात है जनजाति शब्द एक संवैधानिक सब्ध है जिसे आदिवासी समूह के लिए प्रयुक्त किया था। 'जनजाति' तथा 'आदिवासी' दोनों शब्द एक दूसरे के समानार्थक शब्द हैं, जिसका अंग्रेजी अनुवाद "ट्राईब" रोमन शब्द "ट्राईबुआ" से बना है और जिसका अर्थ है "एक राजनैतिक इकाई"। पहले इस शब्द का प्रयोग उन सामाजिक समूहों के लिए किया जाता था जो अपने भू-भाग से परिभाषित होते थे। सर्वप्रथम लुईस हेनरी मॉर्गन[6] (1868) ने यह स्पष्ट किया की जनजाति एक समूह है, जिसमें सामाजिक संस्थाएं होती हैं, राजनैतिक नहीं। बाद में धीरे-धीरे 'जनजाति' शब्द आदिम सामाजिक समूह का पर्याय बन गया है। आज 'जनजाति' शब्द का अर्थ प्राचीन युग की राजनैतिक इकाई से परिवर्तित होकर गरीबी एवं पिछड़ेपन से पीड़ित जनसमूह को अभिलक्षित करते हैं। शताब्दियों से चले आ रहे सतत शोषण व जुल्म ने उनके धैर्य को पूर्णत: नष्ट कर दिया तथा उनके गौरवपूर्ण अतीत को आज की वर्तमान दुखमयी अवस्था से सामंजस्य स्थापित करना कठिन हो गया है।

भारत के सभी जनजातियों में से कुछ जनजातियाँ ऐसी भी हैं जिन्हें 'विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह' के अंतर्गत रखा गया है, जिनकी विशेषता घटती हुई या स्थिर जनसंख्या, साक्षारता का निम्न स्तर, परंपरागत कृषि प्रौद्योगिकी एवं निम्न स्तर की आर्थिक स्थिति है। यह समूह हमारे समाज के सबसे कमजोर वर्गो में से एक है क्योंकि ये संख्या में बहुत ही कम है जिसके कारण उनका सामाजिक एवं आर्थिक विकास नहीं हो पाया है और समान्यतः खराब अवसंरचना एवं प्रशासनिक समर्थन वाले सुदूर क्षेत्रों में निवास करते हैं। इससे पहले इस वर्ग को आदिम जनतीय समूह के नाम से

[6] Morgan, Lewis Henry.(1968). The American Beaver and His Works. US : The classics

जाना जाता था। देश के 17 राज्यों एवं 1 संघ राज्य क्षेत्र से 75 जनजातीय समूहों की पहचान की गई है जिसे विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (पी.वी.टी.जी.) की श्रेणी में रखा गया है। इन विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह ने सामाजिक और आर्थिक रूप से विकास नहीं हो सका है क्योंकि इनका निवास भारत की प्रशासनिक संरचना के घेरे से बहुत दूर पड़ता है। जिसके कारण इनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं शैक्षणिक जीवन अति दयनीय बनी हुई है। अतः सरकार द्वारा इन्हें प्राथमिकता दी जाती है ताकि उन्हें सुरक्षा दी जाए और उनका विकास किया जा सके। विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह की कमजोरी को देखते हुये यह आवश्यक हो जाता हैं कि पी. वी. टी. जी. के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए केंद्र और राज्य द्वारा विशेष जनजाति केन्द्रित योजनाएँ सुचारु रूप संचालित किया जाय जिसका प्रमुख उद्देश्य इन वर्गों की आर्थिक और शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करना हो।

सन् 1998-99 में विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों के अनन्य विकास के लिए 100% केंद्रीय रूप से एक अलग योजना आरंभ कि गई। बाद में इस योजना को वर्ष 2008-09 में अधिक प्रभावी बनाने के लिए संशोधित भी किया गया। इस योजना के अंतर्गत भारत के समस्त जनजातियों में से केवल 75 विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह में शामिल किया गया है। यह योजना को अत्यंत लचीली बनाया गया है तथा यह प्रत्येक राज्य को उन क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करने मे सक्षम बनाती है। इस योजना के अंतर्गत आवास, भूमि संवितरण, भूमि विकास, कृषि विकास, पशु विकास, संपर्क सड़कों का निर्माण, प्रकाश संबंधी योजना के लिए ऊर्जा के गैर-परंपरागत स्त्रोतों की स्थापना, जनश्री बीमा योजना सहित सामाजिक सुरक्षा के साथ व्यापक सामाजिक-आर्थिक विकास को रखा गया जिसके परिणाम स्वरूप ही विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह का सम्पूर्ण विकास किया जा सकता है और उन्हें विकास की मुख्य धारा से जोड़ा जा सकता है। इसके लिए भारत सरकार के संविधान के अनुच्छेद 275 (1) के अंतर्गत केंद्रीय सहायता राशि भी प्रदान की जाती है।

सन 2013-14 के दौरान दीर्घकालिक "विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों के लिए संरक्षण व विकास योजना" के कार्यान्वयन को जारी रखा गया। संरक्षण सह-विकास योजनाओं को राज्य सरकारों और संघ राज्य क्षेत्र अं□मान और निकोबार द्वीप समूह में पाँच वर्षों के लिए स्वंम के द्वारा किए गए आधारभूत सर्वेक्षणों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर 'निवास स्थान विकास दृष्टिकोण' को अपनाकर तैयार किया गया था। संरक्षण व विकास योजनाओं में प्रत्येक वित्त वर्ष के वार्षिक प्रावधानों तथा उस कार्यकलाप के कार्यान्वयन में लगाए गए अभिकरण का भी उल्लेख किया जाता है। राज्य सरकार और संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन को यह अनुदेश दिया गया कि सभी विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों के लिए समानुपातिक रूप से वित्तीय संसाधन प्रदान करे तथा सरकार और गैर-सरकारी संगठनों के माध्यम से इनके विकास के लिए आवश्यक उपायों एवं योजनाओं को सुलझाए जिससे इनकी आधारभूत आवश्यकता पूर्ण हो सके और विकास कि मुख्य धारा को अपना सकें। भारत सरकार द्वारा विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (पी.वी.टी.जी.) की राज्य/संघ राज्य क्षेत्रवार सूची निम्नलिखित है-

क्रमांक	राज्य / संघ राज्य क्षेत्र	पी.वी.टी.जी.
01	मध्यप्रदेश (छत्तीसगढ़)	1 अबूझ मारिया 2 बैगा 3 भारिया 4 हिल कोरबा 5 कमार 6 सहरिया 7 बिरहोर
02	आंध्र प्रदेश	8 बो□ 9 बों□ पोरजा 10 चेंचू 11 □गरिया 12 गुटोब गाड़ाबा

		13 खोण□पोरजा 14 कोलाम 15 कोण□रे□□ 16 कों□सवारा 17 कुटिया खों□ 18 पारेंगी पोरोजा 19 थोटी
03	बिहार (झारखं□)	20 असुर 21 बिरहोर 22 बिरजिया 23 हिल खरिया 24 कोरवा 25 मल पहरिया 26 परहाइयास 27 सौरिया पहरिया 28 सावर
04	गुजरात	29 कथोड़ी 30 कोटवालिया 31 पधार 32 सिधि 33 कोलघा
05	कर्नाटक	34 जेनू कुरुबा 35 कोरागा
06	केरल	36 चोलनाइकायन 37 कादर 38 कट्टुनायकन 39 कुरुम्बा 40 कोरागा
07	महाराष्ट्र	41 कटकरिया 42 कोलाम 43 मरिआ गों□

08	मणिपुर	44 मारम नागास
09	ओ□ा	45 बिरहोर 46 बों□ 47 □□ई 48 □ारिया खोड़ 49 जुआंग 50 खरिया 51 कुटिया खोड़ 52 लानजिया सौराव 53 लोधा 54 मांकि□ा 55 पौड़ी भूयान 56 साउरा 57 चुकटिया
10	राजस्थान	58 सहरिया
11	तमिलना□	59 कट्टू नायकन 60 कोटा 61 कोरुम्बा 62 इरुला 63 पनियान 64 टो□
12	त्रिपुरा	65 रियांग
13	उत्तर प्रदेश	66 बुकसा 67 राजी
14	पश्चिम बंगाल	68 बिरहोर 69 लोधा 70 टोटो
15	अं□ान एवं निकोबार द्वीप समूह	71 ग्रेट अं□ानीज़ 72 झरवा 73 ओंगेज 74 सेंटेनली 75 शोम पेन

उपरोक्त राज्यवार पी.वी.टी.जी. सारिणी के अंतर्गत 75 जनजातीय समूहों का चयन किया गया है। इस सारिणी के अंतर्गत आने वाले सभी समूहों के लिए समय समय पर विशेष सहयोग दिया जाता है जिससे इनको इस सारिणी से अर्थात आर्थिक रूप से पिछड़ेपन की स्थिति से बाहर निकाला जा सके। कहने माँ मतलब यह है की उपरोक्त सारिणी चीर स्थायी नहीं होती है बल्कि प्रत्येक पंचवर्षीय सत्र के बाद निर्धारित पी.वी.टी.जी. और अन्य जनजातियों का मूल्यांकन किया जाता है। यदि पी.वी.टी.जी. सारिणी में से कोई जनजातीय समूह की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक स्तर में सुधार हो जाता है अर्थात निर्धारित विकासीय सूचकांक के ऊपर उठ जाती हैं तो उन्हें इस समूह/सारिणी से बाहर कर दिया जाता है। इसके साथ ही साथ यह भी प्रावधान होता है यदि कोई अन्य जनजातीय समूह जो पी.वी.टी.जी. में शामिल नहीं थी उसके सामाजिक-आर्थिक स्तर में गिरावट आ जाती है तो उस जनजातीय समूह को उसमें स्थान मिल जाता है। ठीक इसी प्रकार मध्य-प्रदेश की बैगा जनजाति उपरोक्त पी.वी.टी.जी. सारिणी के अंतर्गत आती है जिसकी जनसंख्या में स्थिरता के साथ घटोत्तरी, शिक्षा स्तर में गिरावट, निम्न आर्थिक स्थिति और आदिम कृषिगत उपकरणों की उपलब्धता इत्यादि विशेषता देखने को मिलती हैं, पी.वी.टी.जी. की प्रमुख विशेषताएं हैं। बैगा जनजाति वर्तमान समय में मध्य-प्रदेश की तीसरी सबसे बड़ी जनजाति हैं। बैगा जनजाति की सात उप-जनजातियाँ हैं जिसके अंतर्गत नारोतिया, भरोतिया, रायभैना, कंठभैना, भिंजवार, कों□आंस और गों□आइना आती हैं। बैगा जनजाति में संयुक्त परिवार की प्रथा आज भी पाई जाती है। बैगा आदिवासी तीज, त्यौहार, और उत्सव पर रंग-बिरंगी पोशाकों में सजते-धजते हैं, साथ ही उनकी अनोखी बेवर खेती अद्भुत मनी जाती है। कहने का तात्पर्य यह है की बैगा जनजाति की सामाजिक-सांस्कृतिक, धार्मिक राजनैतिक पृष्ठभूमि अद्भुत है जो किसी भी अन्य जनजातीय समूह में नहीं देखी जा सकती है। इनके इस अद्वितीय विशेषता में पारिस्थितिकी की प्रमुख भूमिका देखने को मिलती है। क्योंकि जिस पर्यावरण में निवास

करते हैं वह पूर्णतः जंगलों से घिरा होता है। जहाँ पारिस्थितिकी ही इनका ईश्वर होता है क्योंकि इनके जीवन के लिए रहवास, भोजन, वस्त्र इत्यादि प्रकृति ही प्रदान करती है। जहाँ तक मध्यप्रदेश राज्य की बात है यह प्राकृतिक सम्पदा से धन-धान्य है। इसका अधिकांश भाग जंगलों, पहाड़ों, नदियों इत्यादि से घिरा है। मध्य-प्रदेश का डिंडौरी जिला इसका प्रमुख उदाहरण माना जा सकता है जहाँ बैगा जनजाति कई पीढ़ियों से बेवर की खेती करते आ रहे हैं। सतपुड़ा की मैकाल पहाड़ियों में बसे बैगा जनजाति का जंगल से गहरा लगाव है, क्योंकि इनकी आजीविका और जीवनशैली जंगलों पर ही आधारित है। बैगा लोग जंगल से जड़ी-बूटीयों इत्यादि का संग्रहण भी करते हैं जिससे नृचिकित्सा आज भी जीवित है। बैगा जनजाति पूरी तरह इस प्राकृतिक पर्यावरण के अनुकूल हैं।

इस प्रकार देखा जा सकता है कि मध्य-प्रदेश का डिंडौरी जिला बैगा जनजाति के लिए बहुत ही उपयुक्त है, जहाँ इनका जीवन सुचारु रूप से चलायमान है और अपना अस्तित्व बनाए हुए है। जहाँ वर्तमान विकासीय दौर में आदिवासियों का जीवन लगातार गर्त में जा रहा है और उनको अपना अस्तित्व बनाए रख पाना भी कठिन हो रहा है। वहीं मध्य-प्रदेश के डिंडौरी जिले के चांडा गाँव में निवास कर रही बैगा जनजाति अपना अस्तित्व बनाए हुए है और उस पारिस्थितिकी का संरक्षण भी स्थानीय तौर पर करती रही है, क्योंकि यह पारिस्थितिकी ही उनका घर है। अतः बैगा जनजाति का इसके स्थानीय पारिस्थितिकी के आधार पर अध्ययन और विश्लेषण किया गया है, जिससे डिंडौरी जिले के चांडा गाँव में निवास करने वाले बैगा जनजातियों के पारिस्थितिकी के बीच के अन्तः संबंध को जाना जा सके। इसके साथ ही साथ स्थानीय पारिस्थितिकी के अंतर्गत बैगा जनजाति के संदर्भ में नृपारिस्थितिकी का विश्लेषण किया गया है।

विषय का चुनाव-

किसी समस्या के अध्ययन करने से पहले उस विषय का चुनाव करना अतिआवश्यक है। प्रस्तुत शोध के अंतर्गत "बैगा जनजाति का नृपारिस्थितिकीय विश्लेषण" नामक विषय का चुनाव

किया है जिसका विषय क्षेत्र मध्य-प्रदेश के [illegible]री जिले का चां[illegible] गाँव है। इस विषय का चुनाव में इस आधार से किया गया है कि बैगा जनजाति अपने स्थानीय पर्यावरण के साथ सामंजस्य बनाए हुए है। वर्तमान के अनियमितताओं के दौए में भी बैगा जनजाति का अस्तित्व बरकरार है क्योंकि इसका पारिस्थितिकी के साथ घनिष्ठ संबंध देखने को मिलता है। एक प्रकुख कारण यह भी है कि सभ्य समाज से इनकी दूरी बहुत ज्यादा है जिसके कारण सरकार द्वारा द्वारा चलायी जाने वाली विकासीय योजनाएँ, जो इनके सामाजिक-आर्थिक स्थिति को केंद्र में रख कर बनाई जाती हैं, उन तक सुचारु रूप से नहीं पहुँच पा रही हैं। फिर भी बैगा जनजाति अपने सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषता को पारंपरिक ढंग से प्रदर्शित करती है। अतः वर्तमान संदर्भ में बैगा जनजाति का नृजातीय अध्ययन और विश्लेषण कि जाना चाहिए। बैगा जनजाति पारिस्थितिकीय अनुकूल से सतत विकास की ओर आगे बढ़ते है। प्रस्तुत शोध में यह जिज्ञासा उठती है कि किस प्रकार पारिस्थितिकी एवं मानव के बीच अन्तः संबंध बना हुआ है। बैगा जनजाति किस तरह से पारिस्थितिकी को अपने दैनिक जीवन में शामिल किए हुए है। अचानक पारिस्थितिकी में हुए किसी भी छोटे-मोटे परिवर्तन से बैगा जनजाति का जीवन भी प्रभावित होता है। यहाँ तक कि इनकी दैनिक दिनचर्या भी बदल जाती है। अतः प्रस्तुत शोध में बैगा जनजाति और पारिस्थितिकी के बीच के अन्तः संबंध को शोध का विषय चुना गया है जिससे नृपारिस्थितिकी अध्ययन और विश्लेषण किया जा सके।

अध्ययन का महत्व-

प्रस्तुत शोध विषय **"बैगा जनजाति का नृपारिस्थितिकीय विश्लेषण"** पर केंद्रित है। भारत के मूल निवासी के रूप में विख्यात आदिवासी, जिनका जीवन अत्यंत सूक्ष्मग्राही होता है। उनके सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, पारिस्थितिकी तथा राजनीतिक पक्षों को समझने हेतु अन्तःदृष्टि की आवश्यकता होती है। यह अन्तः दृष्टि तभी उत्पन्न हो सकती है जब अवलोकनकर्ता क्षेत्रकार्य करते हुए आदिवासी जीवन का अभिन्न अंग बन जाय। प्रस्तुत शोध का केंद्रीय विषय 'बैगा जनजाति' और

'नृपारिस्थितिकी' है। बैगा जनजाति के आस-पास का वातावरण सदा से परिवर्तनशील रहा है। जिसके कारण इनका सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित होता रहा है। बैगा जनजाति हमेशा से ही सभ्य समाज से दूरी बनाए हुए है यही कारण कि वह आज भी आधुनिकीकरण एवं पश्चिमीकरण इत्यादि परिवर्तनों से दूर है। जिसका प्रमाण उनके अत्यंत सरल एवं दयनीय सामाजिक स्थिति को देखने से पता चल सकता है। वर्तमान समय में इनकी आर्थिक स्थिति का प्रमुख माध्यम वहाँ की पारिस्थितिकी है, जो बैगा जनजाति के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करता है। यदि इन्हें इस पर्यावरण से अलग कर दिया जाय, तो शायद उनके जीवन का अस्तित्व मीट ही जाय और इसके साथ ही नृपरिस्थितिकी का भी अंत हो जाएगा। बैगा जनजाति के लिए यह जंगल ही उनके घर हैं, जिसमें उनकी और उनके पूर्वजों की आत्माएं निवास करती हैं। अतः बैगा जनजाति के नृपारिस्थितिकी अध्ययन के अंतर्गत सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनैतिक पहलुओं का अध्ययन करना तथा प्रकृति-मानव-आत्मा की अवधारणा को वर्तमान स्थिति में बैगा जनजाति के संदर्भ में समझना अतिआवश्यक है। इसके साथ ही साथ बैगा जनजाति का एमिक दृष्टिकोण के माध्यम से नृजातीय वर्णन भी किया गया जो किसी जनजातीय जीवन को समझने में मदद कर सकती है। वर्तमान समय में बैगा जनजाति की सामाजिक-सांस्कृतिक विकास की दर तीव्र है, यदि उनके नृपारिस्थितिकी ज्ञान को जो उनका देशज ज्ञान है, का प्रलेखन और संरक्षण नहीं किया गया तो शायद वह विलुप्त हो जाएगा, इसलिए भी यह शोध अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

शोध प्रश्न-

बैगा जनजाति का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक पक्ष उनके स्थानीय पारिस्थितिकी से प्रभावित होता है जिससे उनके जीवन की विभिन्न क्रिया-कलाप भी परिवर्तित होते रहते हैं। अतः शोध प्रश्न बनाता है की किस प्रकार बैगा जनजाति पारिस्थितिकी के साथ सामंजस्य स्थापित किए हुए है?

अध्ययन का उद्देश्य-

किसी भी शोध के लिए सबसे महत्वपूर्ण उसके उद्देश्य को निर्धारित करना होता है। इस शोध अनुसंधान में "बैगा जनजाति का नृपारिस्थितिकीय विश्लेषण" के बीच में अंतर संबंध को ढूँढने का प्रयास किया गया है। इस शोध में बैगा जनजाति के विभिन्न प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं कला इत्यादि पक्षों को पारिस्थितिकी के आधार से विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध से संबन्धित निम्नलिखित शोध उद्देश्यों को आधार बनाया गया है।

- बैगा जनजाति का नृजातिवर्णन करते हुए नृपारिस्थितिकी संबंध को समझना।
- बैगा जनजाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं में पारिस्थितिकी तत्वों का पता लगाना और विश्लेषण करना।
- बैगा जनजाति के संदर्भ में "प्रकृति-मानव-आत्मा" अवधारणा का अध्ययन और विश्लेषण करना।
- बैगा जनजाति के आर्थिक व्यवस्था में पारिस्थितिकी तत्वों का पता लगाना।

प्राक्कल्पना-

1. (a^0) बैगा जनजाति की सम्पूर्ण आर्थिक व्यवस्था वहाँ के स्थानीय पारिस्थितिकी पर निर्भर करती है।

   (a^1) बैगा जनजाति की सम्पूर्ण आर्थिक व्यवस्था वहाँ के स्थानीय पारिस्थितिकी पर पूर्णतः निर्भर नहीं करती है।
2. **(a^0)** बैगा जनजाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक तत्वों पर पारिस्थितिकी की भूमिका पूर्णरुपेण देखने को मिलती हैं।

(a^1) बैगा जनजाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक तत्वों पर पारिस्थितिकी की भूमिका न के बराबर देखने को मिलती हैं।

3. (a^0) बैगा जनजाति का "प्रकृति-मानव-आत्मा" अवधारणा के आधार पर विश्लेषण किया जा सकता है।

   (a^1) बैगा जनजाति का "प्रकृति-मानव-आत्मा" अवधारणा के आधार पर विश्लेषण नहीं किया जा सकता है।

अध्ययन की सीमाएं-

किसी भी शोध कार्य में कठिनाईयों का आना जायज है परंतु शोधरथी द्वारा इन कठिनाइयों को दूर किया जाना चाहिए। इस शोध कार्य के दौरान भी कई कठिनाइयां समेन आयी थी, जिसे हर संभव दूर करने का प्रयास किया गया। शोध कार्य को एक निर्धारित समय सीमा होने के कारण मुझे तथ्यों के संकलन निश्चित समय अवधि में करना पड़ा, जिसके कारण प्रति दिन क्षेत्रकार्य करने का प्रयास किया गया है। शोध क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों एवं सीमाओं का सामना करना पड़ा जिससे शोध कार्य कुछ समय के लिए बाधित हुआ था, जो निम्नलिखित है-

- **समय की कमी-** प्रस्तुत शोध कार्य के दौरान पर्याप्त समय का अभाव था जिसके कारण शोधार्थी को कम समय में अपना शोध कार्य को पूर्ण करना पड़ा है। समय का अभाव होने के कारण 100 परिवार का अवलोकन एवं साक्षात्कार लेने का प्रयास किया गया है।
- **सूचना दाता की अनुउपलब्धता-** क्षेत्र कार्य के दौरान सूचनादाता की अनुपलब्धता की समस्या का सामना करना पड़ता था, क्योंकि बैगा जनजाति के लोग सुबह-सुबह अपने काम

से जंगल चले जाते थे। जिसके कारण शोधार्थी को आंकड़े एकत्रित करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था।

- **मौसम-** शोध कार्य के दौरान उस क्षेत्र में खराब मौसम होने की वजह से क्षेत्र कार्य करने में ठेर सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता था। क्योंकि जिस समय क्षेत्र कार्य किया जा रहा था वह वर्षा ऋतु का समय था। वर्षा के कारण शोधार्थी को क्षेत्रकार्य करने में ठेर सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता था।
- **यातायात का अभाव**- शोधार्थी को क्षेत्रकार्य करने के लिए गाँव तक पहुँचने ही दूरी तय क्जरानी पड़ी क्योंकि उस क्षेत्र में यातायात संबंधी कोई भी साधन उपलब्ध नहीं थे। चूँकि बैगा जनजातियों का आवास गाँव के एक सुदूर अंचल क्षेत्र मे स्थित था, जो जंगलों से धीरा हुआ है जहां पर आज भी बस यातायात पंहुच पाना असंभव है इसके वजह से शोधार्थी को शोध क्षेत्र तक जाने में समस्याओं का सामना करना पड़ता था।